Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

राजेंद्र यादव के उपन्यासों में स्त्री की सामाजिक स्थिति

Anjana Singh*

Research Scholar (Hindi), Awadhesh Pratap Singh University, Rewa, Madhya Pradesh

सार – ***राजेन्द्र यादव ने स्त्री एवं दलित विमर्श को अपने उपन्यासों का केंद्रीय विषय बनाया है प् वे इसी विषय के कारण हमेशा विवाद के घेरे में रहे हैं। इसीलिए मैंने राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में नारी-चरित्र विषय अनुसंधान हेतु चयन किया है। इसका मूल कारण है विभिन्न वर्गों की नारियों की वास्तविक स्थिति की ओर समाज का ध्यान आकर्षित करना। नारियों की समस्याएँ, एवं उनकी घुटन तथा छटपटाहट का चित्रण यादव के उपन्यासों में प्रमुखता से दृष्टिगत होता है। नारियों की स्थिति में आता सुधार तथा उनके अंतर मन को अभिव्यक्ति देने का कार्य राजेन्द्र यादव ने अपने उपन्यासों के माध्यम से सफल रुप में किया है।***

----------X----------

प्रस्तावना

वास्तविक रुप से देखा जाए तो नारी समाज का अभिन्न अंग है। संसार की उत्पत्ति एवं विकास में जितना योगदान स्त्रियों का है उतना पुरुषों का नहीं। आगे चलकर पुरुषों ने ग्रंथों, धर्म ग्रंथों का आधार लेकर षडयंत्र और कुटनीति से स्त्री के लिए अलग एवं अपने लिए अलग मानदण्ड लगाकर उसे कैद बना लिया। उसे घर की चार दिवारों में कैद कर दिया।

यदि कोई रथ सही रूप में चलाना हो तो उसके दोनों पहिए समान होने चहिए। इनमें से न कोई छोटा और न कोई बड़ा होना चाहिए। जो पहिया छोटा होता है वह धीरे-धीरे क्षीण होकर टूट जाता है। ठीक इन्हीं पहियों की तरह समाज का रथ चलाने के लिए स्त्री-पुरुष में समानता होना आवश्यक है। इस विषय में डॉ. शीला रजवार का मानना है कि एक स्वतंत्र बुध्दिमान और पूर्ण पुरुष की आवश्यकता भी यहीं है कि उसे स्वतंत्र, बुध्दिमानी और पूर्ण महिला का संसर्ग प्राप्त हो। किसी देवी, मानवी, स्वाभिमानी या दासी, बुद्धिजीवी या कामिनी, पर्दे की रानी या निर्लज्जा का नहीं। सभ्यता के विकास रुपी वाहन की प्रक्रिया में नारी या पुरुष वास्तव में दो पहिए बनकर चलने चाहिए। परन्तु पुरुष ने स्त्री अपने से अधिक श्रेष्ठ न हो इसलिए उसके शरीर को केन्द्र में रखकर उसके चारों ओर से रीति-रिवाज बनाकर उसे कैद कर लिया, जो आगे चलकर रुढ़ि-परम्परा बन गई। इससे स्त्री के व्यक्तित्त्व विकास एवं समाज की प्रगति में बाधा बन गई। स्त्री को केवल उसके शरीर तक ही सीमित रखना गलत है। वह समाज में प्रतिष्ठा की पात्र है। उसके मुक्ति की याचना करते हुए सुमित्रानन्दन पंत ने लिखी पक्तियाँ बडी उल्लेखनिय हैं

मुक्त करो नारी को मानव! युगबंदिनि नारी को, युग-युग की निर्मम कारा से जननि सखि प्यारी को! भारतीय समाज में पुरुष प्रधान संस्कृति है, जिसमें नारी अनेक समस्याओं से घीर गई हैं। हिंदी के अनेक धुरन्धर साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से नारी समस्याओं एवं उसके उपायों को अंकित करने का सफल प्रयास किया है। ऐसे साहित्यकारों में से एक है राजेन्द्र यादव। इन्होंने अपने सारा आकाश उखडे हुए लोग कुलटा मंत्र-विध्द शह और मात अनदेखे अनजान पुल एक इंच मुस्कान एक था शैलेंद्र इन उपन्यासों में स्त्रियों की समस्याओं की ओर दृष्टिक्षेप करने का प्रयास किया है। जैसे वैवाहिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक आदि कारणों से उत्पन्न हानेवाली समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। जो निम्न प्रकार है।

पारिवारिक समस्याएँ

परिवार एक ऐसी मूलभूत सामाजिक संस्था है जो व्यक्ति एवं समाज को जोडकर रखने का काम करती है। परिवार के कारण ही व्यक्ति एवं समाज का विकास सही दिशा में होता है। अर्थात परिवार, व्यक्ति एवं समाज के बीच की सीडी है और इसी परिवार को सही रुप से चलाने में नारी प्रमुख भूमिका अदा करती है। स्त्री अपने विविध रूपों के माध्यम से कर्तव्य पथ पर चलकर परिवार और समाज में अपना अस्तित्त्व निर्माण करती है। परन्तु पुरुष मानसिकता स्त्री के महत्त्व को नजर अंदाज करती है। स्त्री पुरुषों-बच्चों के सुख-दुख में सहभागी होती है, परन्तु पुरुष नहीं इस विषय में महिला जानकार महाश्रमणी कनक प्रभा का मन्तव्य उल्लेखनीय है परिवार के उस घटक का नाम महिला है, जो

www.ignited.in

परिवार की रीढ़ होने पर भी कुछ नहीं होती। परिवार तंत्र के संचालन में उसकी अहम् भूमिका होती है, किन्तु उसका स्वयं का अस्तित्त्व विवादास्पद रहता है। वह अपने लिए कभी नहीं जीती, फिर भी उसकी सांसों पर पहरे लगे रहते हैं। वह सबके सुख-दुख में भागीदार बनती हैं। पर उसका दुःख उसे अकेले ही भोगना पड़ता है। वह सबकी मानसिकता को समझकर अपना कार्यक्रम निश्चित करती है, किन्तु उसके मन को समझने की चिन्ता किसी को नहीं है। उसके जीवन की सार्थकता पुरुष की अधिनता स्वीकार करने में ही मानी जाती है। वह कितनी ही सक्षम और समझदार क्यों न हो, एक औरत होने के कारण ही वह सबकी उपेक्षा का शिकार होती है। पति को परमेश्वर मानना और उसके द्वारा प्रदत्त शारीरिक एवं मानसिक यातनाओं को मूकभाव से सहन करना भारतीय नारी का आदर्श माना जाता है। परन्तु भारतीय नारी अब अपने अस्तित्त्व के प्रति सचेत हो गई है। वह अपने स्वातंत्र्य के लिए आगे बढ रही है परन्तु पुरुष मानसिकता उसके विकास एवं स्वातंत्र्य को सह नहीं पा रहा। जिससे स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में दरार पड़ने लगी है।

राजेन्द्र यादव ने अपने उपन्यासों में परिवार के बनते-बिगडते सम्बन्धों को चित्रित करने का प्रयास किया हैं। पारिवारिक सम्बन्धों की संवेदनशीलता उनके उपन्यासों का प्रमुख गुण हैं परिवार के विघटन की प्रक्रिया का आरम्भ आधुनिकीकरण की तेजी से ही हुआ है। आधुनिकता के कारण परिवार एवं परिवार के सम्बन्धों मे बदलाव होने लगा है। इससे केवल परम्परा से चली आ रही समस्याओं का निराकरण ही नहीं हुआ बल्कि बदलते वक्त के साथ अनेक समस्याएँ भी सामने आने लगी। साथ ही समस्याओं का क्षेत्र व्यापक होता गया। आधुनिकीकरण के कारण जीवन में आये नये-नये मूल्यों से संयुक्त परिवार के विघटन में तेजी आयी, जिससे परिवार के सम्बन्धों में तणाव पैदा होने लगा महंगाई, बेरोजगारी, यांत्रिक ठंडापन, साधनों का अभाव आदि कारणों से व्यक्ति-व्यक्ति में स्वार्थ की भावना बढ़ने लगी। लोग एक-दूसरे के साथ केवल मतलब का सम्बन्ध रखने लगे। परिवार और समाज में आत्मियता की जगह औपचारिकता ने ली। ऐसे वातावरण में स्त्री के सामने परिवार एवं परिवारिक सम्बन्धों में अनेक समस्याएँ, उभरकर आने लगी हैं।

राजेन्द्र यादव ने अपने उपन्यासों में परिवार एवं परिवारिक सम्बन्धों को लेकर उभरनेवाली समस्याओं का सूक्ष्म एवं जीवन्त रुप में अंकन किया है, जो निम्न रूपों में देख सकते हैं -

- बिखरते हुए दाम्पत्य जीवन की समस्याएँ।
- टूटे हुए दाम्पत्य जीवन की समस्याएँ।
- परिवारवालों के स्वार्थीवृत्ति की समस्याएँ।
- अनात्मियता की समस्याएँ।
- पीढ़ी अन्तराल की समस्याएँ। आदि

राजेन्द्र यादव के कतिपय उपन्यासों में दाम्पत्य जीवन का बिखराव उभरकर आया है। उनके कुलटा, मंत्र-विद, एक इंच मुस्कान आदि उपन्यासों में दाम्पत्य जीवन के बिखराव की समस्याओं का चित्रण किया है।

कुलटा उपन्यास में मिसेज एवं मेजर तेजपाल नामक दम्पत्ति हैं। दोनों के स्वभाव में काफी विरोध एवं रुचि भिनता होने से उन में हर वक्त मन-मुटाव होता हैं मेजर तेजपाल सख्त एवं रौबिले स्वभाव के है। उनका आस-पास के माहोल, बच्चों, स्त्रियों के मन पर आतंक छाया हैं। जबकि मिसेज तेजपाल अत्यंत मृदू, कोमल एवं उन्मुक्त स्वभाव की है। उन्हें शादी के पहले से ही मेजर का व्यक्तित्त्व पसन्द नहीं था इसलिए वे हर काम उनके मन के विरोध में करती है। वह मेजर के बातों का खण्डन करने का एक भी अवसर नहीं छोड़ती थीं। जिस बात से मेजर को नफरत है उसे मिसेज तेजपाल जानबूझकर करती मेजर एवं मिसेज तेजपाल को मैदान से घर लौटते समय पॅन्ट-शर्ट पहनी युरोपियन महिलाए जाती हुई दिखती हैं। जिन्हें देखकर मेजर बेशर्म औरतें कहते है तभी मिसेस तेजपाल उनकी बात का विरोध करती हुई कहती है, इसमें बेशर्मी की क्या बात है! ये तो अपने-अपने कपड़े हैं। ऐसी खुली रहती है तभी तो ऐसी स्वस्थ हैं।वह इतना ही कहकर रुकती नहीं, दूसरे दिन पिकनिक जाते समय खुद पॅन्ट-शर्ट पहनकर निकलने लगती है।

एक इंच मुस्कान उपन्यास की रंजना शंकालु स्वभाव की स्त्री है। उसका पति अमर लेखक है। उसे उसकी कई पाठिकाओं के पत्र आते हैं, अमर भी उनके जवाब लिखकर भेजता है। रंजना को अपने पति के नाम पर आनेवाले अन्य स्त्रियों के पत्र अच्छे नहीं लगते, विशेषतः अमला के इसी बात को लेकर वह अमर के साथ झगडे करती है, परन्तु अमर का अमला के साथ का पत्र व्यवहार बन्द नहीं होता। इसी कारण रंजना के दाम्पत्य जीवन में बिखराव आने लगता है।

इस प्रकार राजेन्द्र यादव ने अपने उपन्यासों के माध्यम से दाम्पत्य जीवन में आते बिखराव को उजागर करने का प्रयास किया है।

www.ignited.in

टूटे हुए दाम्पत्य जीवन की समस्या

राजेन्द्र यादव ने बिखरते हुए दाम्पत्य जीवन की समस्या के साथ टूटे हुए दाम्पत्य जीवन की समस्या को अपने उपन्यासों में उजागर किया है। उदा. कुलटा, एक इंच मुस्कान, खड़े हुए लोग आदि

कुलटा उपन्यास में पति-पत्नी के बीच स्वभावगत विरोध एवं रुचि भिन्नता के कारण दाम्पत्य जीवन टूट जाता है। मिसेज तेजपाल को मेजर तेजपाल शुरु से ही पसन्द नहीं थे परन्तु उसके घरवाले उनके साथ शादी करा देते हैं। मिसेज तेजपाल अपने पति के साथ स्वभावगत एवं रुचिगत मेल न करा पाने पर अपने पुराने प्रेमी के साथ भाग जाती है और जाते समय मेजर तेजपाल को लिखे खत में उनके पुरषत्व पर संशय व्यक्त करती है मेजर इस बात को सह नहीं पाते। उन्हें पागलपन के दौरे आने लगते हैं। वे चिल्लाचिल्लाकर यही कहते थे कि मैं भी आदमी हूँ। मैं अभी दिखा दूँगा, मैं मर्द हूँ। लाओ, औरत लाओ, मेरे सामने, मैं अभी दिखाता हूँ...। उन्हें पागल होने के कारण नौकरी से निकालकर सैनिकी अस्पताल में भर्ति करा देते है।

उखडे हुए लोग' उपन्यास की मायादेवी का देशबन्धु के साथ प्रेम सम्बन्ध स्थापित होता है, जो उसके शादी के बाद भी बना रहता है मायादेवी का पति उसे मारता-पीटता है तथा देशबन्धु को डराता-धमकाता भी है परन्तु कोई फर्क नहीं पडता मायादेवी पति के साथ झगडा करके देशबन्धु के यहाँ आकर चारचार महीने रहती है। आखिर पति को अपनी बेटी के खातिर हारकर देशबन्धु के साथ उपरी तौर पर मित्रता का सम्बन्ध बनाना पडता है मायादेवी अपने पति को देशबन्धु के स्वदेश महल वास्तु के उद्घाटन के समय देशबन्धु के साथ मिलकर पति को दवा की जगह जहर देकर मार डालती है। मरने से पहले मायादेवी का पति सूरज के पास काफी अनुनय करता है। सूरज जी, मैंने अपने कानों से सुना है, आज मुझे जहर दिया जायेगा मुझे बचाओं सूरज जी मुझे बचाओ.. पर कोई फायदा नहीं होता। पति के मरने पर कुछ ही दिनों में मायादेवी पाती है कि उसकी कीमत एक रखेल से अधिक नहीं है। वह अपनी बेटी पद्मा को लेकर देशबन्धु के यहाँ रहने लगती हैं।

इस प्रकार मायादेवी अपने ही हाथों से पैरों पर कुल्हाडी मार लेती है, अपने दाम्पत्य जीवन को तोड देती है।

शह और मात' उपन्यास में लेखक ने प्रिंसेस अपर्णा के माध्यम से टूटे हुए दाम्पत्य जीवन की समस्या को उजागर किया है। अपर्णा राजस्थान के एक सामंती रियासत में ब्याही जाती है। उसका पति राजकुमार इतना ऐयाशी और शराबी था कि कई दिन घर से बाहर रहता था। वह अपना वक्त पार्टियों, नाचगाणों में गवाता जब घर आता तो महल के अन्य लोगों की बाते सुनकर अपर्णा को शराब की नशे में कोडे से पीटता है। उसके अत्याचार को अपर्णा कई दिन घुट-घुटकर सहती हैं। जब उसे पिता की मृत्यु की खबर मिली तो वह मायके आती है, अपने ससुराल नहीं जाती। वह अपने छोटे देवर, भाभी के साथ ही बम्बई में रहती हैं।

इस प्रकार राजेन्द्र यादव ने अपने उपन्यासों के माध्यम से टूटे हुए दाम्पत्य जीवन की समस्या को चित्रित करने का प्रयास किया है।

परिवारवालों की स्वार्थी वृत्ति की समस्या

आज के युग में हम देखते हैं कि बढती हुई आधुनिकता के कारण मनुष्य स्वार्थी और आत्मकेंद्रित बनता जा रहा है यह स्वार्थी वृत्ति समाज में ही नहीं तो परिवारों में, रिश्तेदार और परिजनों में दिखाई देने लगी है। यह स्वार्थी वृत्ति परिवार में रहनेवाली स्त्रियों के लिए समस्या बनकर सामने आती है। राजेन्द्र यादव ने इस स्वार्थी वृत्ति की समस्या को उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया है। जैसे - सारा आकाश, अनदेखे अनजान पुल, मंत्र-विध्द आदि।

सारा आकाश उपन्यास में यादव ने परिजनों की स्वार्थी वृत्ति की समस्या को अत्यन्त सजीव रुप में अंकित किया है। उपन्यास का नायक समर एवं नायिका प्रभा संयुक्त परिवार में रहनेवाले नवविवाहित दम्पत्ति हैं समर कॉलेज में पढता है जबकि प्रभा घर में ही काम करती है। दोनों में से कोई भी कमाता नहीं हैं। वे घरवालों पर आश्रित हैं घर में कमानेवाला समर का बड़ा भाई धीरज है इसलिए अम्मा-बाबूजी उसका एवं उसकी पत्नी का खयाल रखते हैं। उनके जरुरतों को पूरा करने का प्रयास करते हैं परन्तु समर कमाता नहीं इसलिए उसके एवं उसकी पत्नी प्रभा के प्रति लापरवाह रहते है। उनकी जरुरतों की ओर ध्यान नहीं देते। समर के घर आते ही अम्मा-बाबूजी ताने कसने लगते हैं। इस बारे में अर्जुन चव्हाण कहते हैं कि - बाबूजी, मतलब के बाप लगते हैं। अपने कमाने वाले बेटे धीरज तथा उसकी बहू पर वे अधिक ध्यान देते हैं तो निकम्मे बेटे समर और उसकी बहू को घर से निकल जाने को कहते हैं। लेकिन अपने निकम्मे बेटे समर को प्रेस में नौकरी मिलती है तो उसकी तनख्वा के लालच में अम्मा एवं बाबूजी का रवैया बदलता है। दोनों के प्रति ठीक ढंग से पेश आने लगते हैं। घर में प्रभा के प्रति अम्मा, भाभी के बर्ताव में परिवर्तन आता है। इस

www.ignited.in

बात को प्रथमतः प्रभा महसूस करती है। वह समर को बताती है कि पहले जीन बातों पर बूरी तहर कलह होती थी, अब उनको तुम्हारी अम्माजी और भाभी जानबूझकर तरह दे जाती हैं अब तो अम्मा बात बात में कहती हैं कि वह सहारा देगा तो मुसिबतें कुछ कम हो जाएंगी।... भाभी ने बेटी को आइस्क्रीम ली तो मेरे पीछे पड़ने लगी कि तुम भी खा लो। बाबूजी भी समर को देर से आने पर प्यार से डाँटते हुए जल्दी आने को कहते है।

पीढ़ी अन्तराल की समस्या का मुख्य कारण है विचारधारा में आया बदलाव विचारधारा का विभाजन प्राचीन मूल्यों एवं नवीन मूल्यों के आधार पर ही किया जा सकता हैं। समाज में विचारधाराएँ भिन्न-भिन्न होती हैं। पुरातन विचारधारा एवं नवीन विचारधाराएँ एक-दूसरे से टकराती हैं पुरानी पीढ़ी एवं नयी पीढ़ी में इसी विचार वैषम्य के कारण पीढ़ी अन्तराल की समस्या निर्माण होती है।

विशिष्ट समय के साथ पीढी एवं विचारधारा में परिवर्तन होता हैं। आनेवाली हर नयी पीढी , युग अपने में कतिपय विशिष्टताएँ लेकर आता हैं, जिससे प्राचीन पीढी में पिता-पुत्र, साँस-बहु, माँ-बेटी आदि दो पीढियों के आचार-विचार, संस्कार, रूचि विषयक अंतराल की समस्याओं को राजेन्द्र यादव ने 'सारा आकाश', 'शह और मात', 'अनदेखे अनजान पुल', मंत्र-विध्द आदि उपन्यासों में चित्रित किया हैं।

अनदेखे अनजान पल उपन्यास में दर्शन का घर-मालिक परम्परागत विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है। उसे तीन बेटे होकर भी उनसे अलग, अकेला रहता है। असल में उसका बेटों के साथ निभाव न होने के कारण उसका घुस्सा सारी पीढ़ी का घुस्सा बनकर सामने आया है। वह बुड्डा हर दिन सुबह जल्दी उठकर गीता का पठन करता है, उसे सारी गीता जबानी याद है। जब निन्नी अपने बड़े भाई दादा के साथ नुमाईश देखने के लिए दर्शन के यहाँ आती है तो उस बुड्ढे को अच्छा नहीं लगत। दादा के किसी काम के लिए बाहर जाने पर दर्शन का निन्नी के साथ बाते करना बुड्ढे को अनैतिक लगता है उसका तो कहना है कि अपनी बेटी के साथ भी यों अकेले नहीं बैठना चाहिए....। वह अपने नौकर के पास दर्शन एवं निन्नी के बारे में कुछ भी उलटी-सुलटी बातें करता हैं।

आज के आधुनिक युग में दिल्ली जैसे महानगर में मानव-जीवन इतना गतिशील हो गया है कि उसके न खाने का ठीक समय है और न ही सोने का दर्शन का बेवक्त आना, देर तक सोना उसके घर मालिक शर्मा को ठीक नहीं लगता है। वह दर्शन की बुराई करता हुआ कहता है - न खाने का टाइम है, न सोने का... किसी दिन दो-दो बजे रात को चले आ रहे हैं तो कभी दो-दो दिन कमरे में बन्द हैं। जागे हैं तो जागते ही चले जा रहे हैं, जैसे बिजली इनके बाप की है, और सो रहे हैं, तो सोये पडे हैं, मानो मर ही गये हो।वह पुरानी विचारधारा, नियमों को मानकर चलनेवाला है इसलिए उसे आधुनिक पीढी के प्रति आक्रोश है जो पीढी अन्तराल की समस्या बन गई है।

'सारा आकाश' उपन्यास में संयुक्त परिवार का चित्रण किया है, जिसमें अम्मा एवं बाबूजी परम्परावादी विचारों के पोषक हैं जब कि बहू प्रभा आधुनिक विचारों की वह सुशिक्षित है। बाबूजी का मानना है कि बहू (प्रभा) घर में पर्दा करे, बड़ों के सामने न आये तथा जोर-से बातें न करें। प्रभा बडों के सामने तो नहीं आती परन्तु परदा भी नहीं करती। इसी बात को लेकर घर में सभी हंगामा मचाते हैं। अम्मा प्रभा को डाँटती हुई कहती हैं बहू, तुम्हारे यहाँ पर्दे का कायदा नहीं है तो न सही, लेकिन इस घर की रीत तो रखो। अरे तुम हमसे न करो तो मत करो, लेकिन बडों से कुछ तो हया-शरम होनी चाहिए। ऐसा भी क्या अंधेर न हमने देखा न सुना द्य सारी बिरादरी में चर्चा हैं जो देखें है सो हमारे करम में थूकै अब दष्ठोन पर दूनिया जहान के लोग आएँगे, क्या कहेंगे जाकर ! भई, तुम्हारे यहाँ नंगे नाचें, तो हमें क्या है ? प्रभा को घर के सभी लोग डाँटते है पर वह पर्दा नहीं करती।

इस प्रकार यादव ने सांस-ससुर एवं बहू के माध्यम से पीढ़ी अन्तराल की समस्या को व्यक्त किया है।

वैवाहिक समस्याएँ

विवाह हिन्दु धर्म प्रथा के अनुसार सोलह संस्कारों में से एक पवित्र संस्कार है। विवाह के माध्यम से ही समाज स्त्री-पुरुष दोनों को गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने की अनुमति देता है। विवाह से दो परिचित-अपरिचित स्त्री-पुरुष पवित्र बन्धन में बंध जातें हैं परन्तु आज के आधुनिक युग में युवक-युवतियों के लिए विवाह एक पवित्र बन्धन के रुप में नहीं, समस्या के रुप में सामने आने लगा है।

भारतीय समाज में विवाह की अनिवार्यता को महत्त्व दिया जाता है। यह केवल दो शरिरों का मिलन न होकर दो आत्माओं का भी मिलन हैं। विवाह स्त्रीपुरुष के दो शरीर को एक आत्मा में बदल देता है। जिससे पति-पत्नी में कोई भेद नहीं रहता परन्तु आज के युग में पुत्र-पुत्री के विवाह की बात निकलते ही घरवालों के सामने एक समस्या खडी होती है।

विवाह प्रत्येक समाज का अभिन्न अंग हैं चाहे वह प्राचीन समाज हो या आधुनिक। यह कोई नयी पध्दति नहीं है, बल्कि अनादिकाल से चली आ रही परम्परा है। जिसे आदिम

www.ignited.in

एवं सभ्य दोनों समाजों ने अपनाया हैं। विवाह ही एक ऐसा बन्धन है जो व्यक्ति एवं समाज में स्थिरता पैदा करता है और यही समाज की प्रारम्भिक ईकाई है। इसी से परिवार का जन्म होता है। प्रत्येक देश एवं समाज की अपनी परम्पराएँ होती हैं, उन्हीं के अनुसार लोग विवाह के विषय में सोचते हैं। प्रेमचन्द के अनुसार - यह (विवाह) कच्चे धागे का कंगन पवित्र धर्म की हथकडी है, जो कभी हाथ से न निकलेगी और मंडप उस प्रेम और कृपा की छाया का स्मारक है, जो जीवन पर्यंत सिर से न उठेगी। परन्तु आज के युग में विवाह के साथ चली आ रहीं रीति-रिवाजों से अनेक समस्याएँ सामने आने लगी हैं। सामाजिक स्तर पर विवाह एक सामान्य तथा स्वाभाविक घटना है।

उपसंहार

28 अगस्त 1929 में जन्में राजेन्द्र यादव ने अपनी कला एवं प्रतिभा के आधार पर स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य में अपनी अलग पहचान बनायी है। वे प्रयोगवादी लेखक हैं। उन्होंने सतत प्रयोग करके लेखन करने का प्रयास किया है। उनका लेखन अपनी अनुभूति की अभिव्यक्ति से जुड़ा हुआ है। जिसके कारण उनका उपन्यास साहित्य यथार्थ एवं जीवंतता लिए हुये है। राजेन्द्र यादव ने केवल उपन्यासों के ही नहीं कहानी, आलोचना, सम्पादकीय आदि के माध्यम से स्त्री एवं दलित विमर्श को हाशिये से निकालकर केंद्र में लाने का स्तुत्य प्रयास किया है यादव के सभी उपन्यासों की कथा एक जैसी न होकर अलग-अलग है। उनका प्रत्येक उपन्यास पाठकों को एक अलग एवं नई प्रेरणा देता है। उनका सारा आकाश उपन्यास संयुक्त परिवार में नवविवाहित दम्पत्ति की होनेवाली घुटन को व्यक्त करता है, जबकि 'उखडे हुए लोग' में परंपरागत रुढ़ि-मूल्यों, विवाह संस्था को तोडकर सम्मिलित जीवन यापन करने के लिए भाग निकले जया एवं शरद की कहानी को व्यक्त करता है। साथ ही मायादेवी जैसी स्त्रियों को पूँजीपतियों के जाल में फसकर अपने परिवार का नाश कर लेने की कथा को व्यक्त किया है। कुलटा उपन्यास में उच्चवर्गीय स्त्री मिसेज तेजपाल के अनमेल विवाह होने के कारण कुंठा, घुटन, संत्रास से मुक्ति पाने के लिए अपने प्रेमी के साथ भाग निकलने की कहानी है। लेखक ने मंत्र-विध्द उपन्यास में सामंती घुटन से उबकर निहायत ही बेकार एवं गलत आदमी का हाथ पकडकर भाग निकलनेवाली सुरजीत कौर की कहानी को व्यक्त किया है। जबकि अनदेखे अनजान पुल उपन्यास में कालीकुरुप निनी को केंद्र में रखकर उसकी मानसिक कुंठा, द्वन्द्व एव संत्रास को व्यक्त किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रताप राजेन्द्र -हिंदी उपन्यास: तीन दशक, कौशल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली 100002, संस्करण-1983
2. भण्डारी माधवी-राजेन्द्र यादव: कथा साहित्य के विविध आयाम, कानपुर, संस्करण 2007
3. मिश्र पारसनाथ-मार्क्सवाद और उपन्यासकार: यशपाल
4. प्रेमचंद-प्रेमाश्रय, भारती भाषा प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1987
5. अमिताभ वेदप्रकाश-हिंदी कहानी के सौ वर्ष, मधुवन प्रकाशन, मथुरा, 1988, प्रकाशन 1988
6. गिरधारी राधा राजेंद्र यादव: कथा यात्रा, गिरनार प्रकाशन, पिलाजी गंज, मेहसाना (उ. गुजरात) प्र.आ. 1982 राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, संस्करण-1995
7. गुप्त विश्वम्भरदयाल उपन्यास का समाजशास्त्र, महेश जैन, श्री पब्लिशिंग हाउस, अजमेरी गेट, संस्करण-1979
8. गुप्त प्रकाशचन्द आधुनिक हिंदी साहित्य एक दृष्टि, आलोक प्रकाशन, बिकानेर राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में

Corresponding Author

Anjana Singh*

Research Scholar (Hindi), Awadhesh Pratap Singh University, Rewa, Madhya Pradesh

bprasoonkumar@gmail.com

www.ignited.in